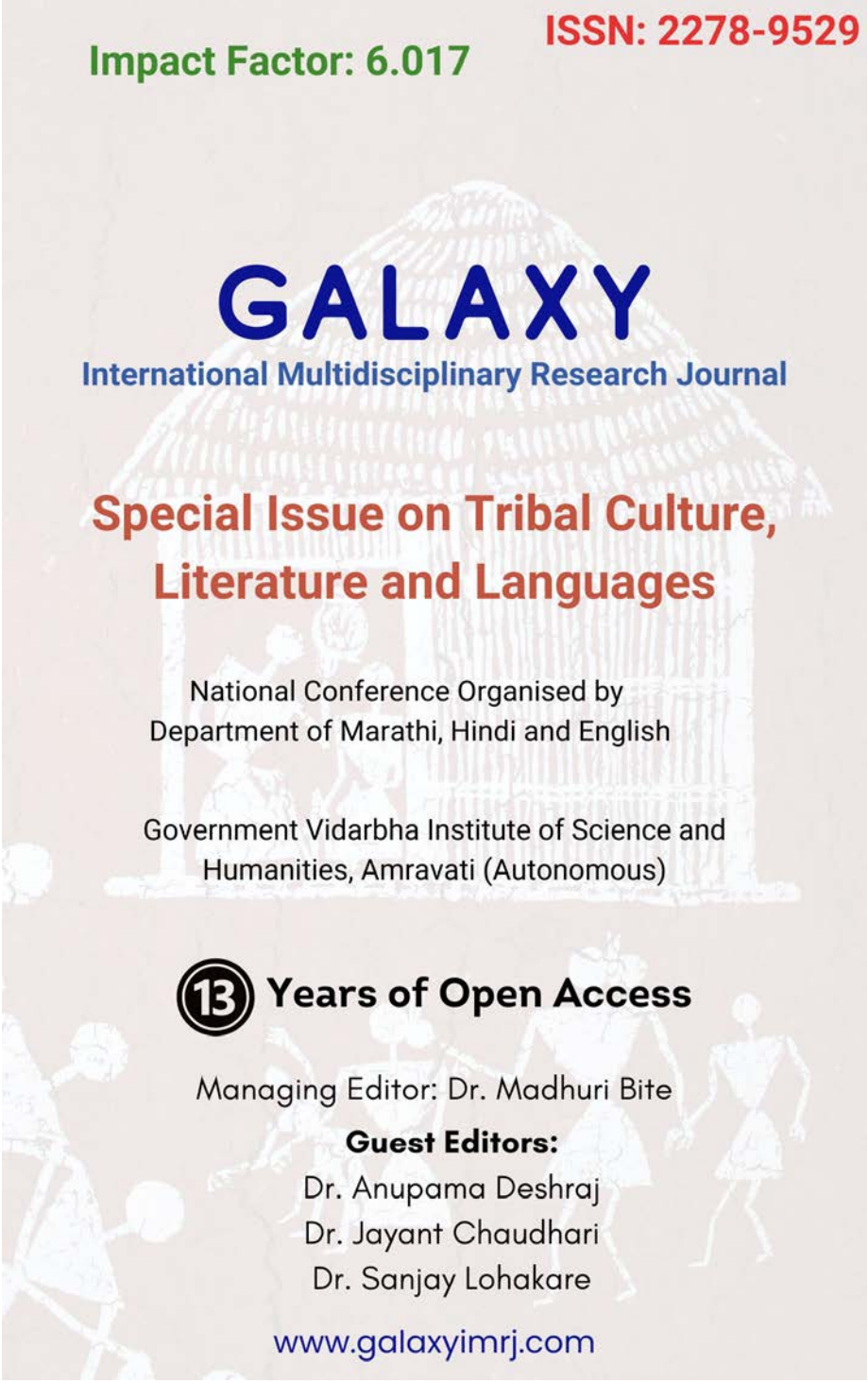

About Us: http://www.galaxyimrj.com/about-us/
Archive: http://www.galaxyimrj.com/archive/
Contact Us: http://www.galaxyimrj.com/contact-us/
Editorial Board: http://www.galaxyimrj.com/editorial-board/
Submission: http://www.galaxyimrj.com/submission/
FAQ: http://www.galaxyimrj.com/faq/

प्रतिनिधिक हिंदी नाटकों में आदिवासी विमर्श

शोधार्थी

गणेशलाल मुंगीलाल बेठे

श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय अमरावती

Email - ganeshbethe001@gmail.com

शोध सारांश

आदिवासी हिंदी नाटक का महत्व वर्तमान समय में अनन्य है। यह आदिवासियों के दुःख-दर्द को उजागर करते हुए उनके संघर्ष, त्रासदी और अस्तित्व की बात करता है। आदिवासी औद्योगिकरण से विस्थापन, जल परियोजनाओं के कारण विस्थापन खनन उद्योग से विस्थापन आदि धीरे धीरे आदिवासियों को उनके प्राकृतिक संसाधनों से निष्कासित करने के कारण बन चुके है। आप के तकनीकी युग में भी आदिम वर्ग सुख-सुविधा, शिक्षा से वंचित है तथा अधिकांश आदिवासी समुदाय गरीबी, भूख, बेरोजगारी, शोषण, कुपोषण, बीमारी और विस्थापन के शिकार है। अतः इन्हे मुख्य प्रवाह में लाने के लिए चेतना स्तर पर इन्हें जगाना, शिक्षा व अधिकारों से परिचित कराने की दृष्टि से प्रस्तुत अनुसंधान का महत्व है। साथ ही आदिवासी समाज का दर्शन, संस्कृति, परंपरा, अंधविश्वास, विवाह, शराब सेवन, टोना-टोटका, प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा आदि आदिवासी जनजीवन की कोई विशेषताओं से परिचित कराने की दृष्टि से इसे अनुसंधान का महत्व है।

बीज शब्द - संकल्पना, भौतिकतावादी, आकांक्षा सामाजिक विघटन, पृष्ठभूमि, दृष्टिकोन, आदिवासी संस्कृति, परिकल्पना, माया स्तूप, प्राचीन, मध्ययुगीन, आधुनिक आदि।

उद्देश :-

- नाटक विधा की विशिष्टता से परिचित करना ।
- नाटक विधा के माध्यम से आदिवासी जनजाति चुनौतियों से परिचित कराना ।
- आदिवासी समाज एवं संस्कृति को जानना ।
- उपेक्षित, अभिशप्त, शोषित, अशिक्षित आदिवासी वर्ग को जागृत करना ।
- आदिवासी जनजीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डालना।
- आदिवासी वर्ग में सम्मान, सुरक्षा, समानता का भाव निर्माण करना ।
- मनुष्य का उद्देश्य 'मनुष्य' नहीं बल्कि वह सृष्टि है जिसमें मनुष्य समस्त जीव जगत और समष्टि का अस्तित्व है। इससे पाठक का अध्येता को परिचित कराना ।
- आदिवासी दर्शन और संस्कृति दर्शन, जीवनशैली को रेखांकित करना ।

शोध प्रविधी

प्रस्तुत शोधालेख के लिए साहित्यिक विश्लेषणात्मक शोध-प्रविधि का प्रयोग किया गया है। साथ ही आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय शोध-प्रविधि का प्रयोग भी किया गया है। इस शोधालेख कार्य की पूर्णता हेतु संकलित नाट्य, लोकगीत, साक्षात्कार तथा आदिवासी अभ्यासक अनुसंधानकर्ताओं द्वारा लिखित ग्रंथ, आलेख आदि साधन-सामग्रियों उपयोग किया गया है।

प्रस्तावना :-

आदिवासी शब्द का सीधा और सरल अर्थ है, मूल निवासी जहाँ तक भारत देश की बात है, यहाँ का पहला और मूल निवासी आदिवासी है। अगर यहाँ के जल जमीन, धन, संपत्ति पर किसी का पहला अधिकार होना चाहिए तो वह आदिवासी है, परन्तु यहाँ उल्टा है, आदिवासी जिसका यहाँ की जमीं पर पहला हक है, उसे उसी की जगह से बेदखल करने की साजिश सदियों से चल रही है । भूमंडलीकरण के आज के दौर में उसकी स्थिति और भी दर्दनाक है। उन्हें अपनी ही जगहों से बेदखल किया जा रहा है। इन्हें उत्पीड़न और शोषण से रोज गुजरना पड़ता है। आज भी यह वर्ग बेबस लाचार और असहाय नज़र आता है। संविधान द्वारा उसे जो अधिकार मिले हैं, उन अधिकारों से उसे वंचित रखा जा रहा है। उनके

विकास के नाम पर उन्हें विनाश की ओर ढकेला जा रहा है। उनका विविध परियोजनाओं के नाम पर शोषण हो रहा है। देश के सबसे मेहनतकश और शक्तिशाली इंसान हर समय पर परेशान नज़र आ रहा है। कोई भी संवेदनशील इंसान, पड़ा लिखा आदमी या लेखक इनकी दशा से बेखबर नहीं है। कुछ चुनिंदा संवेदनशील लेखक साहित्य के माध्यम से इनके दुख दर्द व संघर्ष को अन्याय, अत्याचार, शोषण की सच्ची तस्वीर को लेखकों ने विविध विधाओं के माध्यम से समाज के सामने रखा। इसमें भी उपन्यास विधा में आदिवासी जनजीवन की अभिव्यक्ति को व्यापक फलक पर रखने का प्रयास हुआ ।

भूमंडलीकरण के चलते आदिवासी समुदाय गांव और शहर के संपर्क में आये। जहाँ एक ओर उनमें चेतना जगी वही, उत्पीड़न भी बढ़ा। आदिवासी अपने खोए हुए अधिकार एवं लुप्त होने की कगार पर खड़ी अपनी संस्कृति को साहित्य के माध्यम से उजागर देखने, परखने में मदद हो रही है। वैसे तो स्वतंत्रता के बाद संविधान में आदिवासी वर्ग को अधिकार मिले तभी से उनका संघर्ष सही मायने में प्रस्थापित समाज के साथ शुरु हुआ। आदिवासी विमर्श, अन्य दलित विमर्श, नारी विमर्श की तरह उन्हें अपने जीवन मूल्य, संस्कृति, भाषा, शैली और अपने बजूद का अहसास होने लगा है कुछ धर्म विशेष के लोग इन्हें इनकी संस्कृति से दूर करके अपनी संस्कृति इनपर थोपने की कोशिश कर रहे हैं परन्तु यह भी सच है कि आदिवासी समुदाय चाहकर भी अपनी जड़ों को नहीं छोड़ सकता, उनकी सभ्यता, संस्कृति इनके रगों में दौड़ती है।

अन्य विधाओं की तरह 'नाटक' जैसी मौलिक विधा में आदिवासी विमर्श या आदिवासी संस्कृति, जीवन दर्शन, जीवनशैली, प्रकृति और उनकी समस्याओं का यथार्थ चित्रण होने लगा है। यह नाट्य जो आदिवासी विमर्श की बात करता है, यह स्वान्त सुखाय या मनोरंजन कर न होकर एक गंभीर रूप से इस पर चिंतन मंथन हो रहा है। यह प्रतिबद्ध विधा है और आदिवासी वर्ग के बदलाव के लिए कटिबद्ध है। इसका स्वरूप व्यापक और मौलिक है। इसमें विद्रोह है, सद्भाव है, वेदना है, स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति है, प्रतिरोध है नकार है, संघर्ष है, ललकार है, क्रांति की भावना है। वैसे आदिवासी साहित्य की ओर धीरे-धीरे बढ रहा है। और इक्कीसवीं सदी तक आते-आते यह विमर्श अब केन्द्र में है।

निम्निलिखित प्रतिनिधिक नाटको में विमर्श

धरती आबा, पोस्टर

आदिवासियों को अपने जल, जंगल और जमीन से प्यार करने वाले समाज पर अंग्रेज सरकार तथा जमींदार, सेठ साहूकारों ने जमकर अत्याचार किया। अंग्रेजों के खिलाफ आदिवासियों के संघर्ष के प्रमुख नायक थे बिरसा मुंडा । 'धरती आबा' कहे जाने वाले बिरसा मुंडा के जीवन संघर्षों को केंद्र में रखकर लिखा गया नाटक है 'धरती आबा। इस नाटक में दिखाया गया है कि अंग्रेजों के द्वारा आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार और भेदभाव को देखकर बिरसा मुंडा विद्रोह करते हैं। बिरसा मुंडा द्वारा अपने आदिवासियों मुंडाओं को संगठित कर अपने अधिकारों से सचेत किया गया है भगवान बिरसा मुंडा स्कूल में हो रहे भेदभाव से क्रांति की ओर उन्मुख होते हैं। वह मुंडाओं के प्रति अपमानजनक टिप्पणियों का विरोध करते हैं और स्कूल छोड़ देते हैं। स्वयं जागरूक होकर उन्होंने यह जागरूकता पूरे समाज में फैलाने की कोशिश की। वह मुंडाओं के भीतर गुलामी से लड़ने के लिए साहस पैदा करते हैं। वह आंदोलन को विदेशी शासन से मुक्ति के संघर्ष में बदल देते हैं। वंचितों के न्याय के प्रति जागरूकता, सूखा, अकाल, भूख और महामारी से जूझते हुए ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौति देनेवाले मुंडाओं के नायक बिरसा की मृत्यु जेल में होती है।

'धरती आबा ' नाटक बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व और उलगुलान आंदोलन के माध्यम से हमारे स्वतंत्रता संग्राम के पन्नों को खोलता है। उनके उलगुलान और बलिदान ने उन्हें 'भगवान' बना दिया। हालात आज भी वैसे ही हैं जैसे बिरसा मुंडा के वक्त थे। परिस्थितियां काफी कुछ बदल गई हैं लेकिन कहीं-कहीं वातावरण वही है। अपने मूल स्थान से आज भी आदिवासी खदेड़े जा रहे हैं, दिकू अब भी हैं। जंगलों के संसाधन तब भी असली दावेदारों के नहीं थे और अब भी नहीं हैं।

बिरसा मुंडा प्रगतिशील विचारधारा के थे वह अपने आदिवासी भाइयों को परंपरागत रूढि, रीति-रिवाजों अंधविश्वासों से बाहर निकालना चाहते थे। मुंडा समाज अपने अज्ञानता और अशिक्षा के कारण व अंधविश्वासों में जकड़े हुए हैं। किसी भी संकट से बचने के लिए वे भूत प्रेत, साधू - ओझा भगवान इन पर भरोसा करते हैं बिरसा मुंडा उन्हें इस अंधविश्वास अंधकार से बाहर निकालना चाहते हैं। वे सचेत करते हुए कहते हैं " बंद कर दो उसे चावल - मुर्गी - खस्सी देना भूत प्रेत और मंत्र में भरोसा मत करो बुरा

समय आ रहा है इसलिए अपने को मजबूत करो मन का अंधेरा हटाकर इसे बुरे समय से लड़ने के लिए तैयार हो जाओ । (१)

जो आदिवासी किसी महामारी को दैवीय प्रकोप मानते थे उनको वे महामारी से बचने के उपाय समझाते। मुंडा आदिवासी हैजा, चेचक, सांप के काटने बाघ के खाए जाने को ईश्वर की मर्ज़ी मानते, बिरसा उन्हें सिखाते कि चेचक- हैजा से कैसे लड़ा जाता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, मौलिक अधिकारों के प्रति जागृत किया। भूत- प्रेत, गंडे-ताबीज, आदि से आदिवासियों को बाहर निकालने का प्रयास किया। धीरे-धीरे बिरसा का ध्यान मुंडा समुदाय की ग़रीबी की ओर गया। बिरसा अपने आदिवासी समाज के दुख - पीड़ा का दर्द देखकर छटपटा था, बेचैन होता था। उससे उनका दुख नहीं देखा जाता था। उनकी संवेदनाओं की अनुभूति बिरसा मुंडा को थी। आदिवासियों का जीवन तब अभावों से भरा हुआ था। न खाने को रोटी थी, न पहनने को कपड़े । बहुत समस्याओं से जूझते हुए लोगों को अपने प्राणों से प्रिय जंगल जमीन से भी वेदखल किया जाने लगा। अपने मां करमी को कहता है," मां! मां ! यह जंगल मेरे हैं यह धरती मेरी है मां! यह नदियां..... यह पहाड़, सब मेरे हैं मैंने धनी बूढ़े से वायदा किया है कि इन्हें छीन कर वापस लाऊंगा। मुंडाओंको अपने गांवों से वेदखल नहीं होने दूंगा।" (२)

एक तरफ ग़रीबी थी और दूसरी तरफ 'इंडियन फारेस्ट एक्ट' 1882 ने उनके जंगल छीन लिए थे। जो जंगल के दावेदार थे, वही जंगलों से बेदखल कर दिए गए। यह देख बिरसा ने हथियार उठा लिए और इस तरह उलगुलान शुरू हो गया था। बिरसा मुंडा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई का पहले महानायक थे बिरसा मुंडा को अपने लोगों से इस बात का पता चलता है कि उनसे जंगल जमीन सब छीन रहे हैं अब आदिवासियों को जंगल से न तो लकड़ी मिलेगी अन्ना तो महुआ नमधु और ना ही शिकार करने देंगे उन्हें जंगल में घुसने तक का अधिकार नहीं रहा था यह बात ज्ञात होने पर बिरसा जंगल पर दावा करने वाली अर्जी देने जाता है वहां पर बाबू अर्जी लेने से इनकार करता है । मुंडा की खिल्ली उड़ाता है। इस बात से क्रोधित होकर बिरसा बाबू से कहता है, "साहब को आप ..... महाजन को तुम ..... और मुंडा को तू .....। नीच समझता है मुंडा को । सुन रे दिकू, मेरा नाम है बिरसा। बिरसा मुंडा । ठीक से बात कर मैं साहब और सरकार से नहीं डरता । " (३)

विदेशी शक्तियों के लगातार आक्रमण से भारत के मूलनिवासी ही अपने अधिकारों से वंचित अपमानित तिरस्कृत जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ा उनके भोले भाले और शिक्षा अज्ञानता का लाभ उठाकर हर किसी ने आदिवासियों को खदेड़ना चाहा है जंगल से आदिवासी अपने पेट की आग बुझाते थे। जानवरों को पालते थे जंगल ही उनके उदरनिर्वाह का साधन है । वहां से इन्हें बेदखल किया जाएगा तो यह लोग कहां जाएंगे क्या करेंगे ? क्या खाएंगे ? इससे आदिवासीयों के अस्तित्व को ही खतरा होगा। इस खतरे से भांपकर बिरसा को आदिवासियों के भविष्य की चिंता होती हैं। लोगों में बढ़ रहे असंतोष ने आदिवासी रीति रिवाजों और प्रथाओं को भी प्रभावित किया, जिसे मूल मानकर बिरसा ने आन्दोलन की शुरुआत की। और इसके लिए एक नए पंथ की शुरुआत की, जिसका मूल उद्देश्य दिकुओं, जमींदारों और अंग्रेजी शासन को चुनौती देना था। आज बिरसा मुंडा को इसी पंथ की वजह से जाना जाता है। इस पंथ को 'बिरसाइट' के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने खुद को भगवान घोषित किया और लोगों को उनका खोया राज्य लौटाने का आश्वासन दिया। साथ ही उन्होंने यह घोषणा की कि मुंडा राज का शासन शुरू हो गया है। निवासियों के जननायक को वे धरती आबा कहते हैं आभा का अर्थ है भगवान उन्हें ऐसा लगता है बिरसा मुंडा के रूप में कोई भगवान ही हमें हमारा इस संकट से बचाने आया है बिरसा से आदिवासियों के इस भोले भोले मन को समझाता है वह उन्हें अपने पर होने वाले अन्याय अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करने की प्रेरणा देते हूं कहता है, " खत्म नहीं होगा आदिम खून है हमारा काले लोगों का खून है यह भूख लांछन अपमान दुख पीड़ा ने मिलजुल कर बनाया है इस खून को इसी खून से जली है उलगुलान की आग यह कभी नहीं बुझेगी कभी नहीं (४)

बिरसा ने अपने आदिवासियों के भीतर चेतना जागृत कर स्वतंत्रता की चिंगारी जलाई थी अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा प्रदान की थी वे कहते हैं, "जंगल हमारे थे.... नदियां हमारी थी, धरती हमारी थी, दिक्कू आए... जमींदार आए... मिशन आया.. चर्च आया.. अंग्रेज आए... सिपाही आए... कचहरी आयी सब पसरते गए और हम मुंडा लोग अपने पैर सिकोड़ते रहे। " (५)

बिरसा एक दूरदर्शी थे, जिनका इतिहास आने वाले समय में आज़ादी और स्वायत्ता की कहानी के रूप में जाना जायेगा। ब्रिटिश सरकार के दौरान गैर आदिवासी (दिकु), आदिवासियों की जमीन हड़प रहे थे और आदिवासियों को खुद की जमीन पर बेगारी मजदूर बनने पर मजबूर होना पड रहा था। बिरसा

मुंडा के समय में उपस्थित परिस्थितियां बहुत कुछ आज भी वर्तमान है। 1895 के दौरान अकाल की स्थिति में उन्होंने बकाया वन राशि को लेकर अपना पहला आन्दोलन शुरू किया। मुंडा समाज को ऐसे ही मसीहा का इंतजार था. उनकी महानता और उपलब्धियों के कारण सभी उन्हें "धरती आबा " यानि 'पृथ्वी के पिता' के नाम से जानते थे। लोगों का यह भी मानना था कि बिरसा के पास अद्‌भुत शक्तियां हैं जिनसे वे लोगों की परेशानियों का समाधान कर सकते हैं। अपनी बीमारियों के निवारण के लिए मुंडा, उरांव, खरिया समाज के लोग बिरसा के दर्शन के लिए 'चलकड़' आने लगे। भारतीय समाज की यह विशेषता है कि यहां की जनता हर विशिष्ट व्यक्ति को भगवान मान लेती है। कई चमत्कार इन महान आत्माओं के साथ जोड़ दिए जाते हैं। बिरसा मुंडा के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ । पलामू जिले के बरवारी और छेछारी तक आदिवासी बिरसाइट - यानि बिरसा के अनुयायी बन गए।

बिरसा मुंडाओं के प्रति अपमानजनक टिप्पणियों के कारण ही मिशन स्कूल नहीं छोड़ देते, बल्कि जनजातीय देवताओं और प्रचलित हिंदू देवताओं से संबंधित कर्मकांडों के प्रति अनास्था भी प्रकट करते हैं। वह धर्म के महत्व और स्वरुप की अपनी निजी व्याख्या करते हैं और एक ऐसे धर्म की स्थापना करते हैं, जहाँ भय नहीं विश्वास है। बिरसा कहता है, " नहीं पूजूंगा अब किसी को । ..... किरस्तान बनकर देख लिया। यीशु की प्रार्थनाओं में अब नहीं उलझने वाला में। तुलसी की पूजा नहीं.... उस काले कृष्ण की भी पूजा नहीं। ... और तुम्हें भी नहीं पूजूंगा सिंवोडा तुम सवों ने मिलकर अंधेरा किया है चारों तरफ़ ।... नहीं डरने वाला अब मैं। ... तुम्हारे सारे प्रेत झूठे हैं सिंवोडा.... झूठे । " (६)

संख्या और संसाधन कम होने की वजह से बिरसा मुंडा ने छापामार लड़ाई का सहारा लिया। लेकिन यह उनके निष्ठा का ही प्रभाव था कि रांची और उसके आसपास के इलाकों में पुलिस उनसे आतंकित थी। अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने के लिए पांच सौ रुपये का इनाम रखा था जो उस समय के लिए बहुत बड़ी रकम थी। बिरसा मुंडा और अंग्रेजों के बीच अंतिम और निर्णायक लड़ाई 1900 में रांची के पास दूम्बरी पहाड़ी पर हुई थी। हज़ारों की संख्या में मुंडा आदिवासी बिरसा के नेतृत्व में लड़े थे। आदिवासियों के तीर-कमान और भाले अंग्रेजों के अत्याधुनिक बंदूकों और तोपों का सामना आखिर किस प्रकार करते? बहुत सारे आदिवासी बेरहमी से मार दिए गए। 25 जनवरी, 1900 के स्टेट्समैन अखबार के मुताबिक इस लड़ाई में 400 लोग मारे गए थे। अंग्रेज़ जीते तो सही पर बिरसा मुंडा हाथ नहीं

आए। लेकिन जहां बंदूकें और तोपें काम नहीं आई वहां पांच सौ रुपये ने काम कर दिया। बिरसा की ही जाति के लोगों ने 500 के लालच में उन्हें पकड़वा दिया। यह उनकी जाति की बेबसी थी।

"धरती आबा " का यह संवाद लगता है जैसे इसी कविता का जवाब है:- "लौटकर आऊंगा मैं.. जल्द ही लौटूंगा मैं अपने जंगलों में, अपने पहाड़ों पर... मुंडा लोगों के बीच फिर आऊंगा मैं तुम्हें मेरे कारण दुःख न सहना पड़े इसलिए माटी बदल रहा हूँ मैं... उलगुलान ख़त्म नहीं होगा। आदिम खून है हमारा। ...काले लोगों का खून है यह। भूख... लांछन... अपमान... दुःख ... पीड़ा ने मिल-जुलकर बनाया है इस खून को । इसी खून से जली है उलगुलान की आग। यह आग कभी नहीं बुझेगी... कभी नहीं।.... जल्दी ही लौटकर आऊंगा मैं" बिरसा मुंडा का यह संवाद नाटक धरती आबावा का मुख्य कथ्य है।

छोटानागपुर के जंगलों में मुंडा, हो, उराँव, संथाल आदि जनजातियाँ युगों से निवास करती रही हैं। ये प्रकृति के सहचर रहे हैं तथा प्रकृति से इनके आत्मीय संबंध ने इनके जीवन-बोध को निश्छल मानवीय संवेदनाओं से भर दिया है। अपनी परम्पराओं, विश्वासों, आस्थाओं और अपनी सहज-सरल जीवन-पद्धति के कारण आदिवासियों ने धरती को, जल को, जंगल को माँ की तरह देवी देवता की तरह पूजा है और धरती की सम्पदा की हर संभव रक्षा की है। आदिवासियों के सरनेम किसी न किसी जीव जंतु के नाम पर होते हैं और वह उन जीव जंतुओं के संरक्षक होते हैं। इसके बावजूद इन्हें लगातार तथाकथित सभ्य समाज के प्रपंचों का शिकार होना पड़ा है। प्रपंचों से दूर यह समाज तथाकथित सभ्य समाज के स्वार्थ की पूर्ति के लिए जीवन की निजता को नष्ट होता देख रहा है । इस अन्याय के विरुद्ध सिधु- कानू, तिलका मांझी और बिरसा मुंडा जैसे नायकों ने संघर्ष किया और अपनी जातीय चेतना, परम्परा, धरती और मनुष्य की गरिमा को स्थापित किया। वर्गीय चेतना के जागृत हुए विना क्रांति संभव नहीं है इसलिए सर्वप्रथम उन लोगों ने जातीय चेतना जगाई।

धरती आबा नाटक बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व और उलगुलान आंदोलन के माध्यम से हमारे स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के कई ऐसे पन्नों को खोलता है, जिनमें समाज के अंतिम कतार में खड़े मनुष्य की चेतना शामिल है। बिरसा के संघर्ष भरे जीवन में मुंडाओं के लिए स्वप्न हैं। जनजातीय समाज के नायक बिरसा मुंडा पूरे 'भारतीय समाज के नायक के रूप में उभरते हैं और गुलामी के कठिन जीवन से मुक्ति के लिए आंदोलन आरम्भ करते हैं। वह मुंडाओं को संगठित करते हैं और नई सामाजिक व्यवस्था

तथा आज़ादी के लिए लड़ते हैं। पहली बार की गिरफ्तारी और जेल की सज़ा काट कर लौटने के बाद वह मुंडाओं को नए सिरे से संगठित कर आंदोलन करते हैं।

पोस्टर नाटक

'पोस्टर' नाटक के द्वारा शंकर शेष जी ने धार्मिक समस्या को प्रस्तुत करते हए उसमें अंतर्निहित शोषण पर तीखा प्रहार किया है। गाँव का पटेल धूर्त चालाक है। आदिवासी मजदूरों की धार्मिक कमजोरी नाजायज तरीके से फ़ायदा उठाने की तरकीब सोचता है। लोगों की धर्मभावना के साथ खिलवाड़ करता है । उनका अज्ञान कायम रखने हेतू धर्म का इस्तेमाल करता है। 'अखंडानंद महाराज' के माध्यम से गॅवार अनपढ़ मजदूरों का उपयोग अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए करता है। आदिवासी मजदूर अज्ञानी है, अनपढ़ है, आदिम अवस्था में जी रहे है। इसी कारण उनके मन मस्तिश्क पर धार्मिक पाखंड़ो का असर तुरंत होता है । पाप और पुण्य की कल्पना से वह जकड़े होने के कारण वे पाप से डरते है। पुण्यप्राप्ति के लिए वे कौनसा भी नुकसान सहने के लिए तैयार रहते है ।

पटेल एक तथाकथित नकली साधु अखंडानंद को बुलाकर लोगों के अज्ञान को बनाए रखने की काशिश करता है। अखंडानंद महाराज का परिचय मजदूरों से कराता हुआ कहता है- " आप के सामने सभी सिध्दियाँ हाथ जोड़ खड़ी रहती हैं। आप तो खाली हाथ से भभूत निकाल सकते हैं। आप तो निपुत्रीक को पुत्र दे सकते है, यहाँ तक सुना है कि आप कैंसर जैसा भयानक रोग ठीक कर सकते है - अभी कुछ दिन पहले महाराज स्वर्ग और नरक की यात्रा करके लौटे हैं। सो आपने साथ वहाँ की बहुतसी तसवीरें लाए आज कल धर्म का स्वरूप इस तरह विकृत ही गया है। समाज के जादातर लोग भाग्यवाद का सहारा लेकर जीवनयापन करते हैं। एक तरफ आधुनिक तकनीकी ज्ञान के आधारपर हम यश के सर्वोच्य शिखर पर पहुँच रहे हैं। दूसरी तरफ इतने पिछड़े हुए है की अंधविश्वास का दामन छोडने के लिए तैयार नहीं है। अज्ञान और अंधविश्वास फैलाने का काम राजसत्ता, धर्मसत्ता और अर्थसत्ता ने मिलकर किया है। इसी कारण ग्राम चेतना अपनी प्रकृति और परिवेश में अनेक अज्ञानजनित कल्पनाओं को समेटे हुई है। इसका फ़ायदा पटेल और अखंडानंद जैसे समाजकंटक लोग लेते हैं।

शोषण

परिचय के बाद अखंडानंद महाराज मजदूरों के उपर अपने संस्कृत ज्ञान का आतंक जमाने हेतू गिता के श्लोक, गुरु वंदना श्लोक, गायत्री मंत्र सभी प्रकार के श्लोक एक दुसरे में घुसेडकर असबध्द रीति से जोर-जोर से मंत्र पठन करता है। अज्ञानवश मजदूर प्रभावित हो जाते है। उसके बाद अखंडानंद मजदूरों में यह विश्वास बनाए रखना चाहता है की उन्हें जो जिंदगी मिली है वह महज उनके पूर्वजन्म के कर्मोंका फल है। इसलिए मजदूरों की आतंकित करता हुआ कहता है- " तो मालिक का साथ दो ..... स्वर्ग का सुख भोगो । मालिक की खिलाफ़त करोगे तो ऐसा दुख पाओगे । और देखो स्वर्ग-नरक की तसवीर"[60] वह मजदूरों डर पैदा करना चाहता है की पूर्वजन्म के फल से हम छूटकारा पा नहीं सकते। इसके साथ वह यह भी विश्वास बनाना चाहता है की आज पटेल ने जो ठाट-बाट पाया है वह उनके पूर्वजनम का फल है। वे पिछले जनम में एक जमींदार के घर में नौकर थे। वहाँ उन्होंने मन लगाकर नौकरी की थी। इस से इस जनम में स्वर्ग सुख पा रहे हैं। इसके साथ दो तसवीरे भी दिखाता है। 'स्वामीभक्ति का फल' नामक तसवीर में स्वर्ग की झलक दिखाई देती है । वहाँ एक व्यक्ति राजसिक वेशभूषा में बैठा है एक सुंदर स्त्री उसे सोमरस का प्याला ला रही है। उसके साथ वह संगीत और नृत्य का आनंद उठा रहा है। उसके बाद

अखंडानंद मालिक से बगावत करने से क्या हालत होती है यह बताने हेतू 'बगावत का फल' नामकी नरक की तसवीर दिखाता है। उस तसवीर में एक नंगा सा घायल और लहूलुहान आदमी जमीन पर पड़ा है, उपर उठने की कोशिश कर रहा है। लेकिन यमदूतो का मास्क लगाए दो व्यक्ति उसे भालों से छेद रहे हैं। यह तसवीर सब मजदूरों को दिखाने के बाद पटेल मजदूरों में कभी भी विद्रोह या संघर्ष का भाव उत्पन्न न हो और सदा के लिए वे भयग्रस्त रहे इसलिए वह तसविरें कारखाने में चिपकाता है।

मजदूर कुछ भय से और कुछ आशा से इन स्वर्ग-नरक के चित्रों को देखते रहते हैं। कुछ के आंखों में डर था और कुछ की आँखो में अगले जनम में कुछ पाने की लालसा दिखाई देती है । इस प्रकार केवल जादा दक्षिणा पाने की लालसा में अखंडानंद महाराज धार्मिक शोषण के द्वारा आर्थिक शोषण की नींव डालते हैं। नाटककार मजदूरों के ऐसे जीवन की झाँकी प्रस्तुत करता है जिसका जीवन अज्ञान, अशिक्षा, के अंधेरे ने जकड़ा हुआ है। रुदी और परंपरा से हटकर वह कुछ नहीं करना चाहते। यदी कोई किरण

दिखाई पड़ी तो तुरंत उसका विरोध करते हैं। अंधेरा समेटकर रहनें में वे अपना कल्याण समझते हैं। उससे बाहर निकलने के लिए इच्छूक नहीं होते। भविष्य में मजदूर गुलामी के भाव में सदा के लिए डूबे रहें इसलिए पटेल हमेशा नकली साधुओं को लाकर उनके मन में झुटी श्रध्दाएँ, विश्वास और निष्ठाए जमा कर देता है।

निकर्ष-

'पोस्टर' नाटक तो आदिवासियों की करुण गाथा है। आदिवासी लोगों में गरीबी, निरक्षता की समस्या, आर्थिक शोषण की समस्या न्याय कानून की समस्या, धार्मिक शोषण की समस्या 'वर्गसंघर्ष की सभी समस्याएँ एकसाथ दिखाई देती है। नारी का यौन शोषण तो नाटक का केंद्रबिंदू है । समस्या' का उद्‌भव, विस्तार, चरणसीमा सभी बिंदुओं का ज्वलंत दस्तावेज बनकर 'पोस्टर' में उभरता आशा-आकांक्षाओं को कुचलने वाले दमनकारी प्रवृत्तियों की कटू आलोचना करते हुए सामाजिक- आर्थिक संदर्भों में न्याय की भूमिका प्रस्तुत की है।

विवेच्य नाटकों की सभी पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण अत्यंत गहराई में जाकर किया है। उन्होंने केवल यथार्थ अथवा आदर्श को महत्व न देकर आदर्श एवं यथार्थ का उचित मात्रा में समन्वय स्थापित किया है। समस्याचित्रण में कहीं भी असंतुलन अथवा अतिरेक नहीं दिखाई देता । गहरी सुक्ष्मता के साथ व्यापक दृष्टि रखकर समस्या चित्रण करने में डॉ. शंकर शेष सफल रहें है।

संदर्भ सूची:-

1) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ - पृष्ठ - ३८
2) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ - पृष्ठ- ३३
3) धरती आबावा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ - पृष्ठ - २९
4) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ - पृष्ठ - १९
5) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ- पृष्ठ- २३
6) धरती आबा (नाटक) - ऋषिकेश सुलभ - पृष्ठ ३१
7) उनि, महाराष्ट्रातील आदिवासींचे लोकसाहित्य, श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपूर, 2007
8) डॉ. वैजयंती पेशवे, कोरकू लोकगीत-संस्कृती आणि सौंदर्य, ए.पी. प्रकाशन 372, हनुमान नगर नागपूर - 440009, डॉ. सौ. शैलजा देवगांवकर, महाराष्ट्रातील आदिवासींचे लोकसाहित्य, श्री साईनाथ प्रकाशन, 11 भगवाघर कॉम्प्लेक्स धरमपेठ, नागपूर
9) डॉ. अशोक द. पाटील, कोरकू जनजीवन विश्वभारती प्रकाशन, नागपूर - 440012 प्रथम संस्करण 1993